एक लड़की एक लड़का और एक पतंग

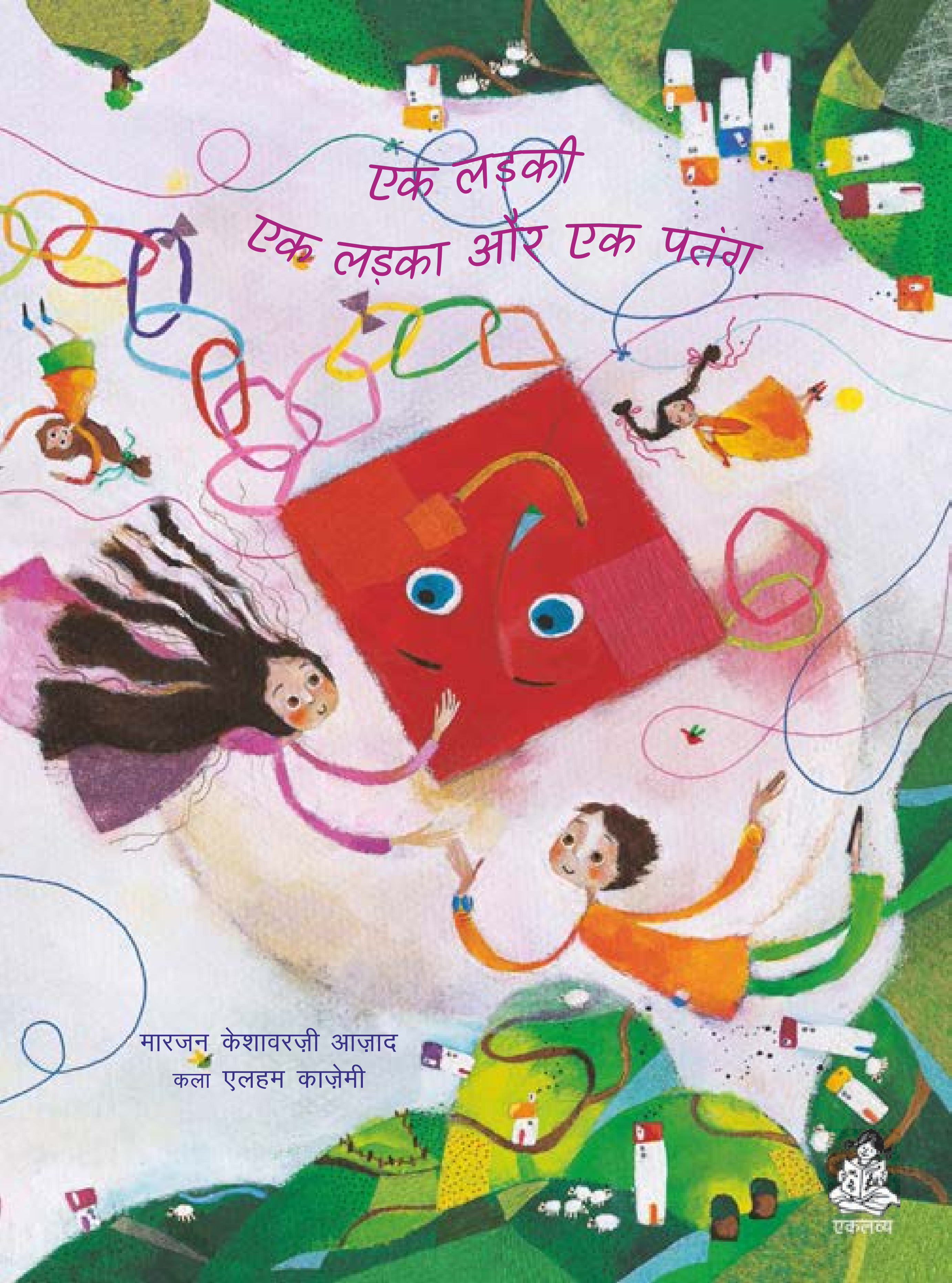

मारजन केशावरज़ी आज़ाद
कला एलहम काज़ेमी

एकलव्य

एक लड़की, एक लड़का और एक पतंग

मारजन केशावरज़ी आज़ाद
कला एलहम काज़ेमी

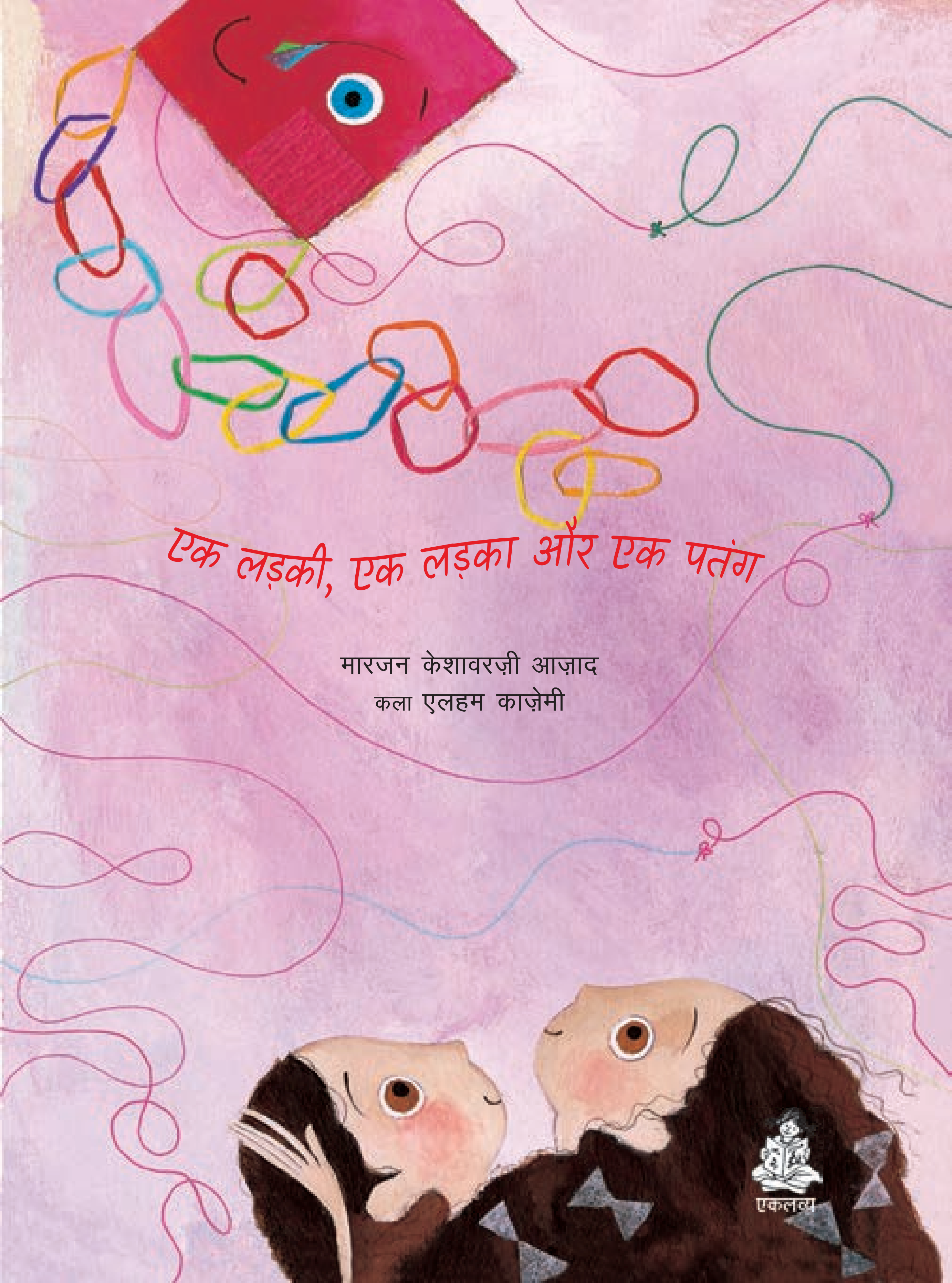

एकलव्य

एक लड़की, एक लड़का और एक पतंग

EK LADKI, EK LADKA AUR EK PATANG

कहानी: मारजन केशावरज़ी आज़ाद
कला: एलहम काज़ेमी
अँग्रेज़ी से अनुवाद: टुलटुल विश्वास

Originally in Persian Published by Shabaviz
© **Shabaviz, Tehran, Iran**
© हिन्दी अनुवाद, एकलव्य (2016)

पहला संस्करण: जनवरी 2016 (3000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रणः फरवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रणः अप्रैल 2019 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रणः दिसम्बर 2021 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रणः अक्तूबर 2022 (5000 प्रतियाँ)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-02-0
मूल्य: ₹ 55.00

यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है। (ISBN: 978-93-81337-82-0 / Price: ₹ 70.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442

एक लड़की

लड़की ने अपनी बैसाखियाँ दीवार के सहारे टिकाईं और कहा, “काश कि मैं दौड़ सकती।”

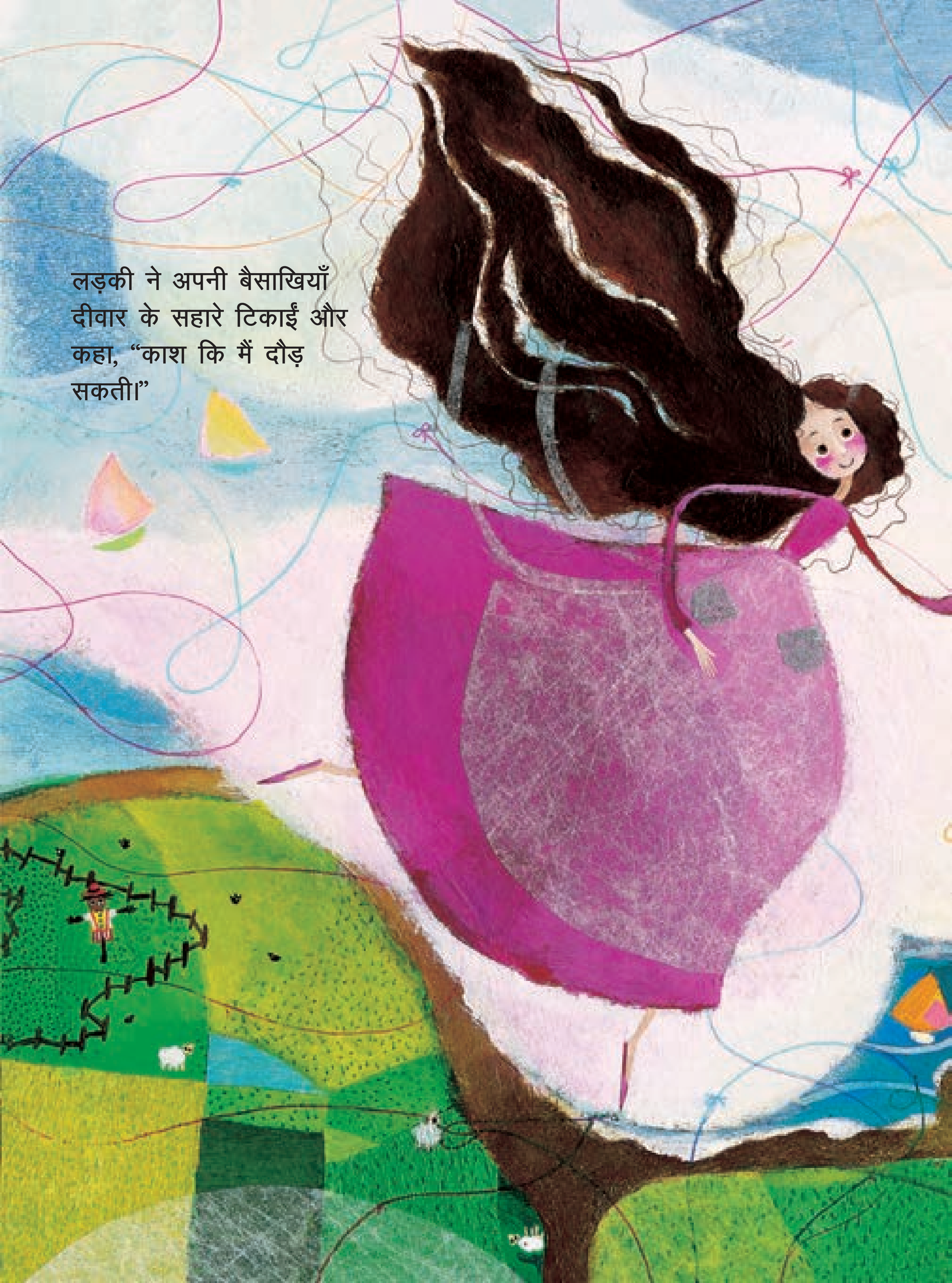

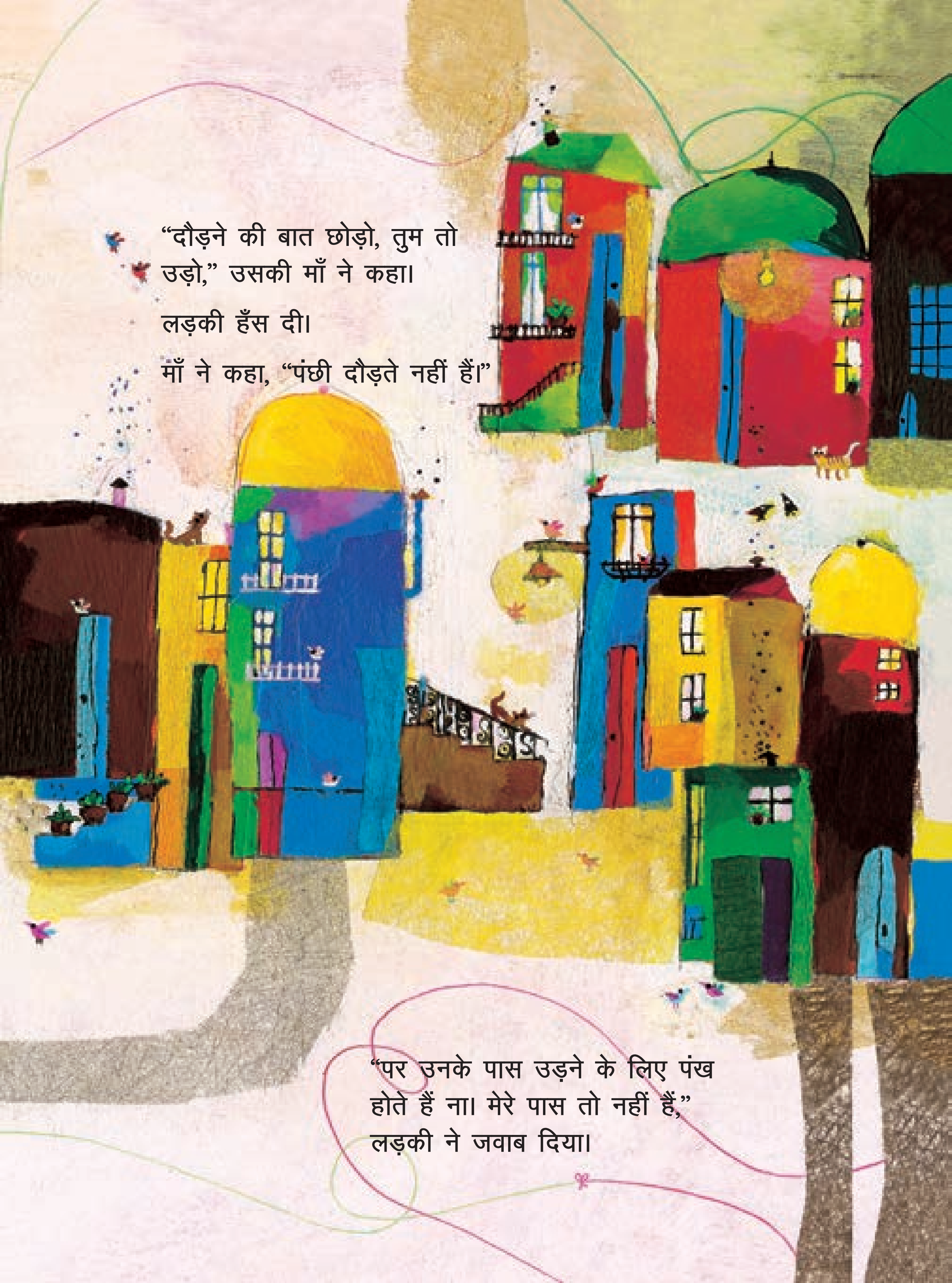

“दौड़ने की बात छोड़ो, तुम तो उड़ो,” उसकी माँ ने कहा।

लड़की हँस दी।

माँ ने कहा, “पंछी दौड़ते नहीं हैं।”

“पर उनके पास उड़ने के लिए पंख होते हैं ना। मेरे पास तो नहीं हैं,” लड़की ने जवाब दिया।

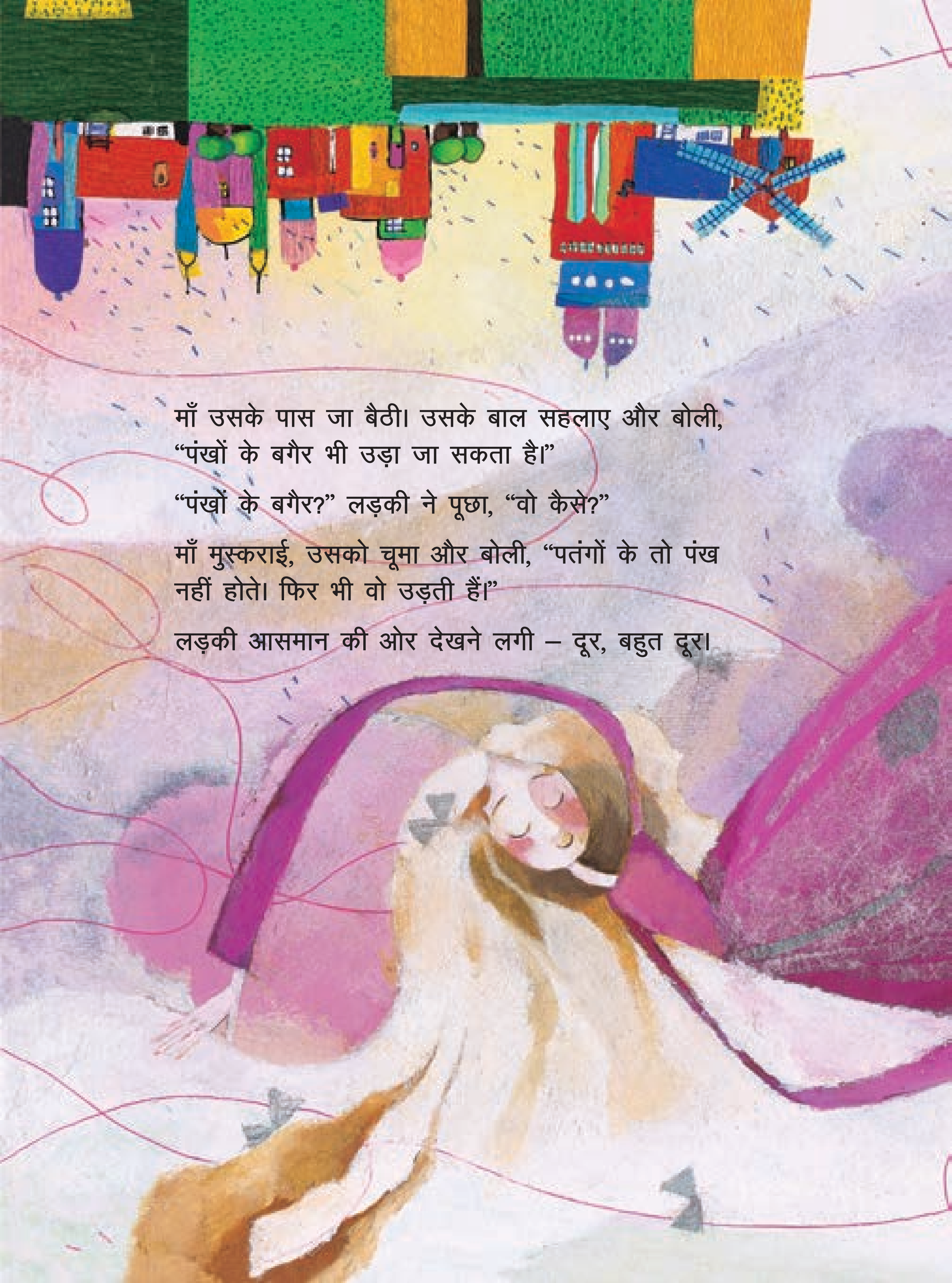

माँ उसके पास जा बैठी। उसके बाल सहलाए और बोली, “पंखों के बगैर भी उड़ा जा सकता है।”

“पंखों के बगैर?” लड़की ने पूछा, “वो कैसे?”

माँ मुस्कराई, उसको चूमा और बोली, “पतंगों के तो पंख नहीं होते। फिर भी वो उड़ती हैं।”

लड़की आसमान की ओर देखने लगी – दूर, बहुत दूर।

एक लड़का

लड़के ने पतंग पर रंगीन कतरनों के आखिरी टुकड़ों को चिपकाया।

“जल्दी करो,” उसकी माँ ने कहा, “सारा रास्ता दौड़ते हुए जाओगे तब भी देर हो जाएगी।”

“आसमान के रास्ते तो हर जगह पास है,” लड़के ने कहा। “पतंग अपना रास्ता ढूँढ लेगी और वक्त पर पहुँच जाएगी।”

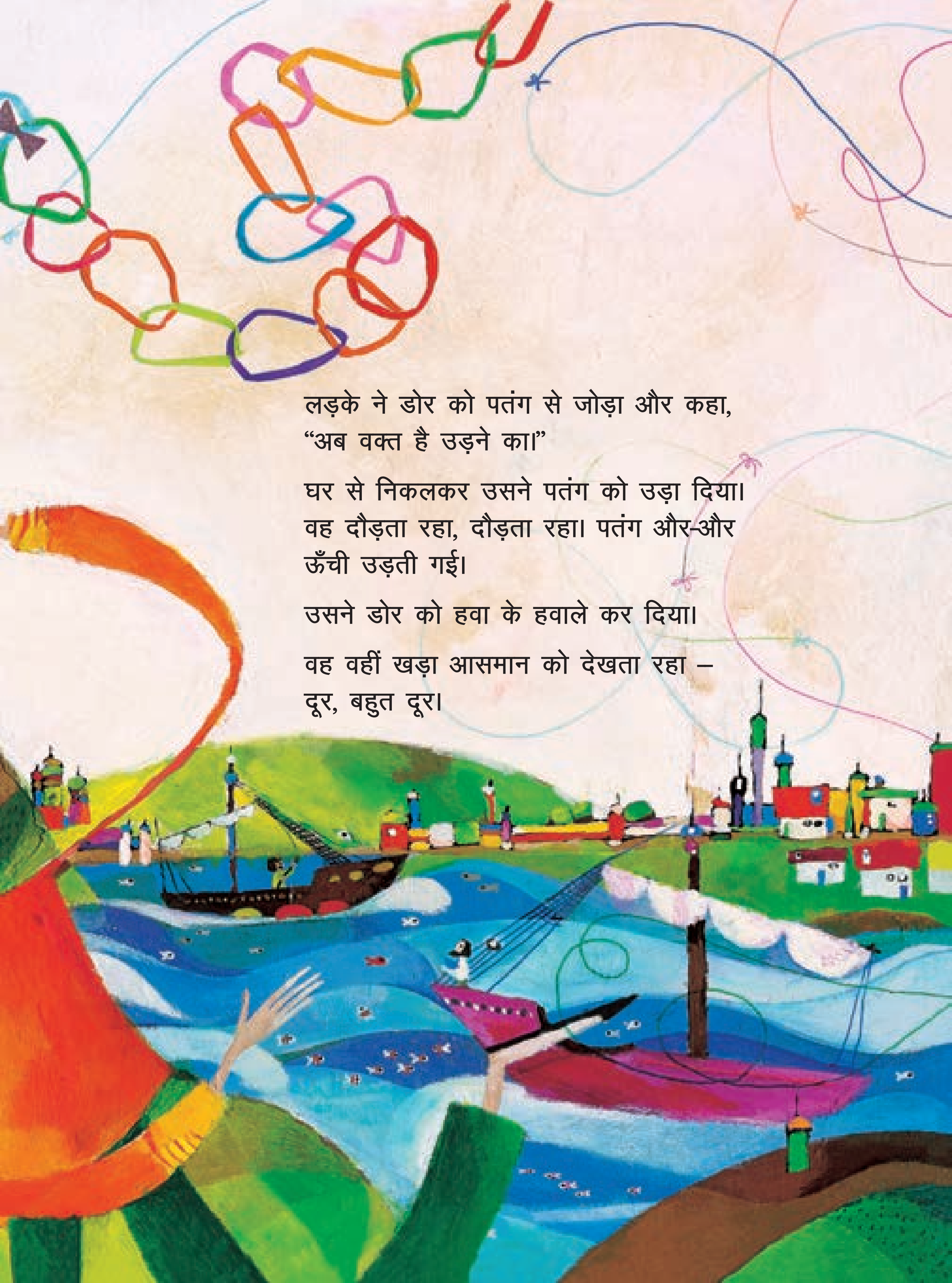

लड़के ने डोर को पतंग से जोड़ा और कहा,
"अब वक्त है उड़ने का।"

घर से निकलकर उसने पतंग को उड़ा दिया। वह दौड़ता रहा, दौड़ता रहा। पतंग और-और ऊँची उड़ती गई।

उसने डोर को हवा के हवाले कर दिया।

वह वहीं खड़ा आसमान को देखता रहा – दूर, बहुत दूर।

पतंग गीले बादलों में से होकर गुज़री।
बादलों पर कई रंग छा गए।

हवा ने कहा, "तुम करीब आ गई हो।
समन्दर को पार कर लो।"

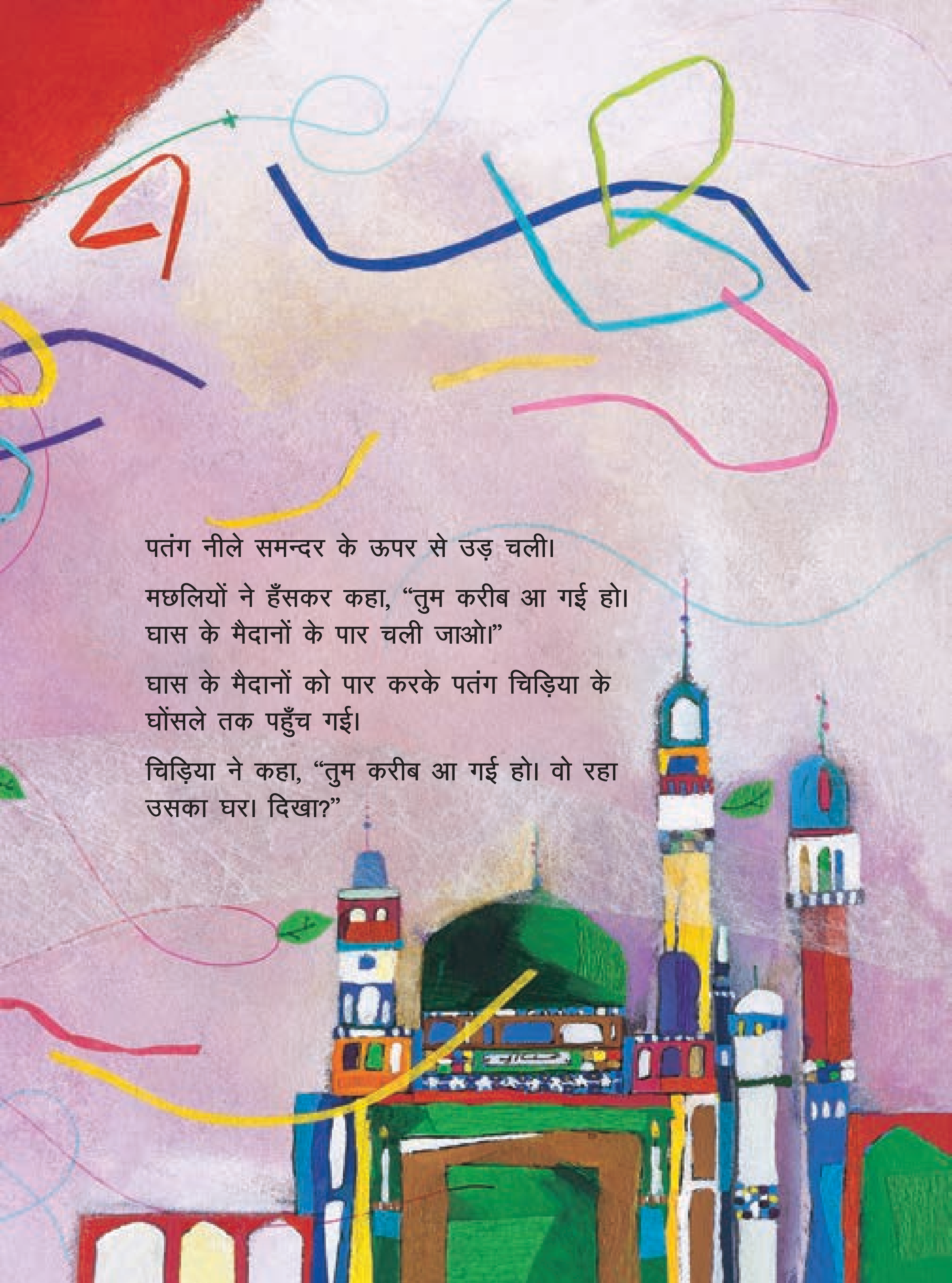

पतंग नीले समन्दर के ऊपर से उड़ चली।

मछलियों ने हँसकर कहा, “तुम करीब आ गई हो। घास के मैदानों के पार चली जाओ।”

घास के मैदानों को पार करके पतंग चिड़िया के घोंसले तक पहुँच गई।

चिड़िया ने कहा, “तुम करीब आ गई हो। वो रहा उसका घर। दिखा?”

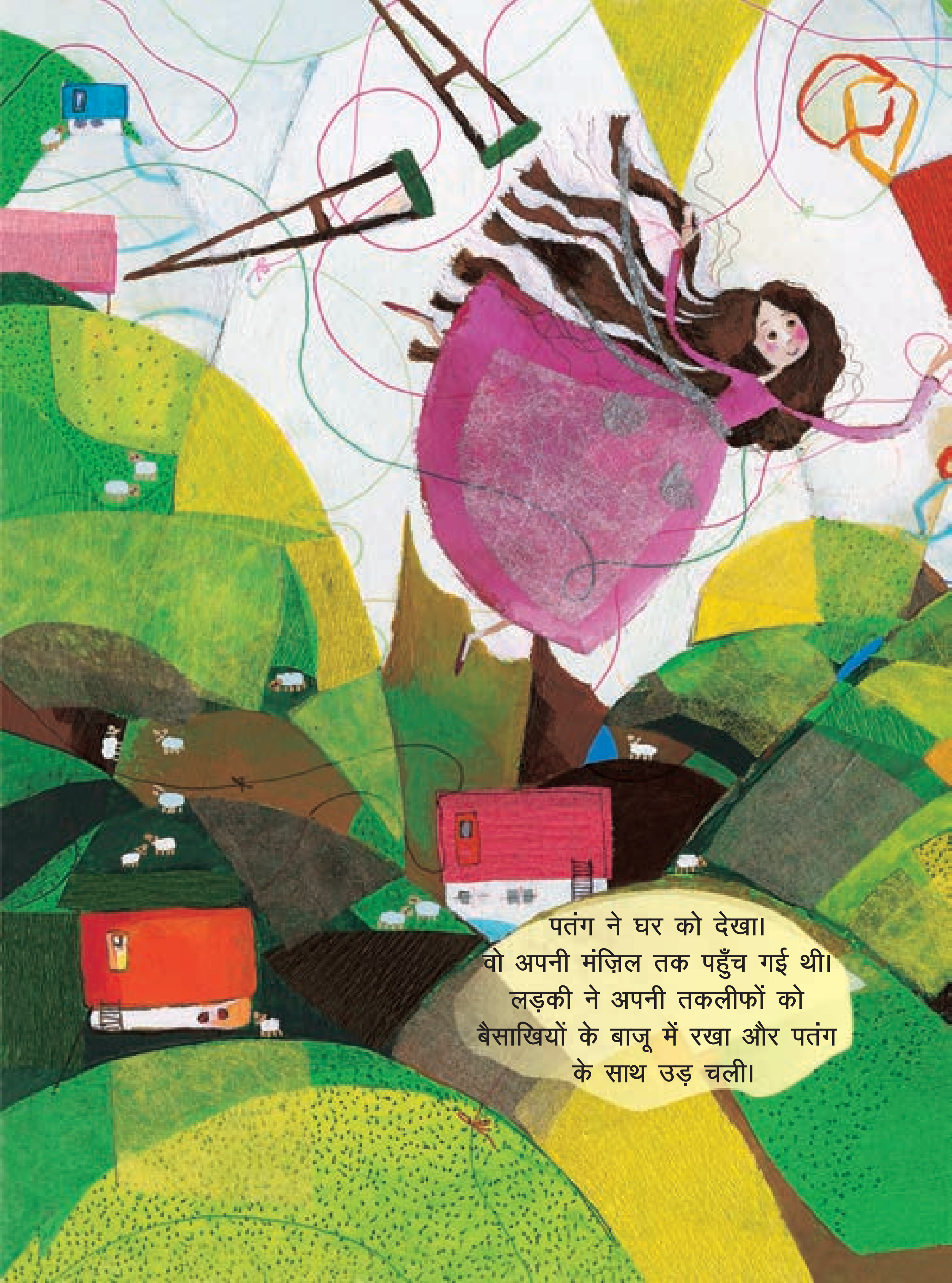

पतंग ने घर को देखा।
वो अपनी मंज़िल तक पहुँच गई थी।
लड़की ने अपनी तकलीफों को
बैसाखियों के बाजू में रखा और पतंग
के साथ उड़ चली।

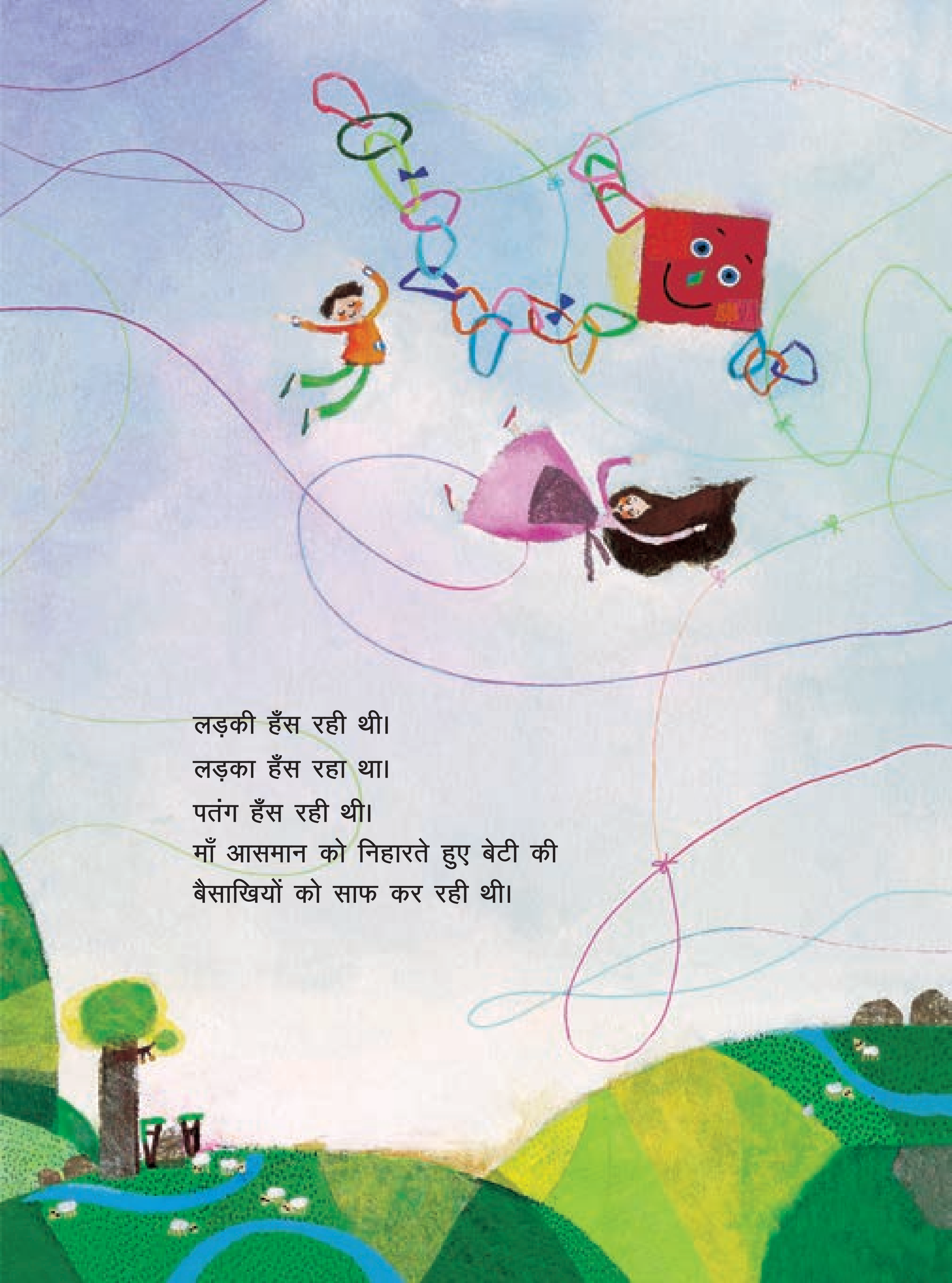

लड़की हँस रही थी।
लड़का हँस रहा था।
पतंग हँस रही थी।
माँ आसमान को निहारते हुए बेटी की
बैसाखियों को साफ कर रही थी।

लड़की दौड़ना चाहती है... पर माँ कहती है उड़ने को।
लड़की आसमान को देखती रहती है, दूर बहुत दूर।
लड़का आसमान के रास्ते भेजता है पतंग, दूर बहुत दूर।
पतंग आसमान, समन्दर और घास के मैदानों को पार कर जाती है, दूर बहुत दूर।
क्या तीनों हमसफर हैं इस कहानी कोलाज में...

parag
एकलव्य
Price: ₹ 55.00
9 789385 236020